International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

शिक्षकों के लिए प्रभावी शिक्षण की रणनीति का अध्ययन

RASHMI
RESEARCH SCHOLAR, GLOCAL UNIVERSITY, SAHARANPUR, U.P

DR. POONAM LATA MIDDHA
PROFESSOR, GLOCAL UNIVERSITY, SAHARANPUR, U.P

सारांश

शिक्षकों की शिक्षण क्षमता को प्रभावित करने वाले संज्ञानात्मक निर्माणवादी रणनीतियों के बारे में यह नई पहल अध्ययन वर्तमान शिक्षक की शिक्षा सुधार के लिए एक संभावित सहायता होगी जिसने संज्ञानात्मक रचनावादी शिक्षण और सीखने पर जोर दिया है। छात्रों को न केवल सीखने के अवसरों से अवगत कराया जाता है, बल्कि उन्हें उन चीजों को भी स्पष्ट रूप से सिखाया जाना चाहिए, जिन्हें जानना सभी छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है। कुछ छात्र इन चीजों को जल्दी और केवल न्यूनतम प्रत्यक्ष शिक्षण के साथ सीखेंगे। अन्य छात्रों को आवश्यक शिक्षण में महारत हासिल करने से पहले शिक्षक द्वारा प्रत्यक्ष शिक्षण और सुधार की आवश्यकता होगी। शिक्षण एक जटिल कला है। प्रभावी शिक्षक ऐसी तकनीकों का उपयोग करते हैं जो अपने छात्रों की सीखने की जरूरतों को पूरा करती हैं। कई चीजें हैं जो छात्र खुद को खोज के माध्यम से सीख सकते हैं, शिक्षक ने शिक्षण को सूट करने के लिए संरचित किया है। कई चीजें ऐसी भी हैं जिनके लिए शिक्षक को अधिक प्रत्यक्ष तरीके से पढ़ाने की आवश्यकता होती है।

मुख्य शब्द पूर्व–सेवा शिक्षक, प्रभावी शिक्षण के उपकरण, संज्ञानात्मक विकास, शैक्षणिक उपलब्धि

प्रस्तावना

शिक्षा सभी विकास प्रक्रियाओं के लिए एक उत्प्रेरक है। यह व्यक्तियों को समाज की जटिल प्रकृति से उभर रही जरूरतों को पूरा करने का अधिकार देता है। शिक्षा का उद्देश्य आदर्श और स्वीकृत सिद्धांतों को चुनने के लिए शैक्षिक प्रक्रिया को संरेखित करने के लिए व्यापक दिशानिर्देशों के रूप में कार्य करता है। शिक्षा एक राष्ट्र की रीढ़ है। शिक्षा का उद्देश्य समाज की मौजूदा जरूरतों और आकांक्षाओं के साथ–साथ इसके स्थायी मूल्यों को प्रतिबिंबित करना है। शिक्षाविदों

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शिक्षा का उद्देश्य पाठ्यक्रम पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकों और विकसित की गई अन्य शिक्षण सामग्री में परिलक्षित हो। शिक्षा बोझ और ऊब के बजाय छात्रों के लिए एक मजेदार और रोमांच बन जाना चाहिए। यह उनकी वृद्धि का एक अभिन्न हिस्सा है और उन्हें अच्छे नागरिक बनने में मदद करता है।

डॉ.सरवपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य महज सूचनाओं का अधिग्रहण नहीं है, हालांकि महत्वपूर्ण और तकनीकी कौशल का अधिग्रहण, हालांकि आधुनिक समाज में आवश्यक है, लेकिन मन के उस मोड़ का विकास, कारण का वह दृष्टिकोण, लोकतंत्र की भावना जो हमें जिम्मेदार नागरिक बनाओ। इंटरनेशनल कमीशन ऑन एजुकेशन ने सीखने के चार बुनियादी स्तंभों पर जोर दिया, अर्थात, जानना सीखना, सीखना सीखना, साथ रहना और साथ रहना सीखना।

स्वामी विवेकानंद ने सुझाव दिया कि शिक्षा बाल केंद्र होनी चाहिए। उनके अनुसार बच्चा सभी शिक्षण सामग्री का भंडार और भंडार है। एक पौधे की तरह एक बच्चा अपनी आंतरिक शक्ति से स्वाभाविक रूप से बढ़ता है। वह आत्म–शिक्षा में विश्वास करता था। उनका मानना था कि हम में से प्रत्येक का अपना शिक्षक है। बाहरी शिक्षक केवल मार्गदर्शन करता है और आंतरिक शिक्षक को उठने और बच्चे के विकास के लिए काम करना शुरू करने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार शिक्षक एक दार्शनिक, मित्र और मार्गदर्शक होता है जो बच्चे को इस अनूठे तरीके से आगे बढ़ने में मदद करता है।

विभिन्न पहलुओं में प्रगति के लिए ज्ञान और कौशल के निरंतर अद्यतन की आवश्यकता होती है। वास्तव में शिक्षा का एक प्रमुख कार्य लगातार सीखने और परिवर्तनों के अनुकूल होने की क्षमता को बढ़ावा देना होना चाहिए। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, शिक्षा स्वयं सामग्री के साथ–साथ शिक्षण की कार्यप्रणाली में भी बदलाव कर रही ळें

भारत में शिक्षा प्रणाली का वर्तमान परिदृश्य

पिछले कुछ वर्षों के दौरान शैक्षिक संस्थानों और कार्यक्रमों में वृद्धि ने वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य को बदल दिया है। बढ़ते स्कूल नामांकन और कई सरकारी कार्यक्रमों की शुरूआत के लिए। स्मार्ट और वर्चुअल

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

क्लासरूम, क्यूआर (त्वरित प्रतिक्रिया) शिक्षा में कोड मूल्यांकन प्रणाली आदि, शिक्षकों की भारी मांग है।

शिक्षक की शिक्षा

शिक्षक की शिक्षा का अर्थ है शिक्षकों की पेशेवर तैयारी। यह केवल शिक्षकों का प्रशिक्षण नहीं है। शिक्षक की शिक्षा केवल शिक्षक प्रशिक्षण से कुछ गहरी है। इसका अर्थ है उस प्रकार के ज्ञान, कौशल और क्षमता का अधिग्रहण जो एक शिक्षक को अपने पेशेवर कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को प्रभावी और कुशलतापूर्वक निर्वहन करने में मदद करता है। इसका तात्पर्य एक शिक्षक के दृष्टिकोण, आदतों और व्यक्तित्व को फिर से दिखाना है। शिक्षण और सीखना प्रक्रियाओं का एक पूरी तरह से तर्कसंगत सेट है। उच्च–गुणवत्ता वाले इनपुट का परिणाम हमेशा उच्च–गुणवत्ता वाले आउट–पुट में नहीं होता है। अच्छी शिक्षा को कभी भी तकनीक या सक्षमता से कम नहीं किया जा सकता है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने शिक्षक की शिक्षा को शिक्षा के एक कार्यक्रम के रूप में परिभाषित किया है, जो लोगों को पूर्व शिक्षा से उच्च शिक्षा स्तर तक पढ़ाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करता है। शिक्षक की शिक्षा एक कार्यक्रम है जो शिक्षक दक्षता और क्षमता के विकास से संबंधित है जो शिक्षक को पेशे की आवश्यकताओं को पूरा करने और वहां की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम और सशक्त बनाएगा।

गुड्स डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन के अनुसार, टीचर एजुकेशन का अर्थ है, सभी औपचारिक और गैर–औपचारिक गतिविधियाँ और अनुभव जो किसी व्यक्ति को शैक्षिक पेशे के सदस्य की जिम्मेदारियों को संभालने या उसकी जिम्मेदारियों को अधिक प्रभावी ढंग से निर्वहन करने के लिए योग्य बनाने में मदद करते हैं। शिक्षक की शिक्षा शिक्षण कौशल, शैक्षणिक सिद्धांत और पेशेवर कौशल शामिल हैं।

शिक्षक की शिक्षा की प्रकृति

i) शिक्षक की शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है औरय प्री–सर्विस, इंडक्शन और इन–सर्विस इसके तीन चरण हैं।

ii) शिक्षक की शिक्षा इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षक बने हैं और पैदा नहीं हुए हैं। यह जोर देता है कि किसी व्यक्ति

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

को पेशे के उचित ज्ञान और कौशल प्रदान करके एक अच्छा शिक्षक बनाया जा सकता है।

iii) शिक्षक की शिक्षा का दायरा व्यापक और व्यापक है जिसमें विभिन्न सामुदायिक कार्यक्रमों और वयस्क शिक्षा, गैर–औपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों आदि जैसे विस्तार गतिविधियों के साथ–साथ पूर्व–सेवा और सेवा शिक्षक की शिक्षा कार्यक्रम शामिल हैं।

iv) यह इस अर्थ में गतिशील है कि यह शिक्षकों को शिक्षा के माध्यम से समाज की भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करता है।

v) शिक्षक की शिक्षा के पाठ्यक्रम को लागू किया जाता है यानी यह शिक्षा के क्षेत्र में अन्य विषयों के सिद्धांत और प्रथाओं को अपनाता है।

vi) शिक्षक की शिक्षा का चरण विशिष्ट कार्यक्रम भविष्य के शिक्षकों के लिए विविध और विशिष्ट ज्ञान आधार को सक्षम बनाता है।

शिक्षक की शिक्षा की आवश्यकताएं और महत्व

शिक्षक की शिक्षा भविष्य के शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए बहुत महत्व और महत्व रखती है। शिक्षक की शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रम वास्तविक शिक्षण वातावरण का सामना करने के लिए भावी शिक्षकों को लैस करते हैं।

i) शिक्षण के विभिन्न तरीकों का ज्ञानरू शिक्षक की शिक्षा कार्यक्रम भविष्य के शिक्षकों को उनके वैचारिक और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करके शिक्षण के विभिन्न तरीकों को समझने में सक्षम बनाता है। यह भविष्य के शिक्षकों को इन शिक्षण विधियों के साथ प्रयोग करके और नए तरीकों को विकसित करके प्रशिक्षित करता है।

ii) शैक्षिक मनोविज्ञान का ज्ञान: एक शिक्षक को विविध छात्रों से भरी कक्षा से निपटना पड़ता है। शिक्षक की शिक्षा कार्यक्रम, शैक्षिक मनोविज्ञान का ज्ञान प्रदान करता है जो भावी शिक्षकों को शिक्षार्थियों, उनकी सीखने की शैली, उनके अंतर आदि को समझने में सक्षम बनाता है जो बदले में उन्हें वास्तविक कक्षा शिक्षण और सीखने में मदद करता है।

iii) शिक्षण की योग्यता: शिक्षक की शिक्षा शिक्षक को अलग–अलग शिक्षण कौशल में

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

प्रशिक्षण देकर प्रवीणता और योग्यता रखने में मदद करती है। ये कौशल शिक्षक को शिक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद करते हैं।

iv) निर्देशात्मक एड्स का ज्ञान: शिक्षकों को ऑडियो–विजुअल एड्स के उपयोग और समझ से अवगत कराया जाता है जो उन्हें किसी विशेष विषय के लिए निर्देशात्मक सहायता का चयन करने और उपयोग करने में मदद करता है।

v) स्कूल प्रबंधन का ज्ञान: शिक्षक स्कूल के प्रत्येक सदस्य के विभिन्न कर्तव्यों, भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के ज्ञान से अवगत कराया जाता है जो उन्हें अपने भविष्य के कैरियर में बाद में विभिन्न भूमिकाएं निभाने में सक्षम बनाता है। यह उन्हें टाइम टेबल, विभिन्न रिकॉर्ड, रिपोर्ट और रजिस्टर तैयार करने के लिए प्रशिक्षित करता है।

vi) टेस्ट, परीक्षा और मूल्यांकन का ज्ञान: परीक्षण, परीक्षा और मूल्यांकन के बीच एक बड़ा अंतर है। शिक्षक की शिक्षा तीनों के बीच एक शिक्षक अंतर सिखाती है औरय विभिन्न प्रकार के परीक्षण तैयार करने और निरंतर व्यापक परीक्षा आयोजित करने के लिए उन्हें प्रशिक्षित करें।

शिक्षक की शिक्षा का क्षेत्र

शिक्षक की शिक्षा के दायरे को समझने के लिए, इसे तीन आयामों में समझना आवश्यक है, इसके विभिन्न स्तरों, इसके त्रिकोणीय आधार और इसके पहलुओं।

i) शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शिक्षक की शिक्षा

शिक्षक की शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शिक्षकों को सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करती है। यह मंच विशिष्ट स्तर पर सिखाने के लिए कौशल प्रदान करता है अर्थात् पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक और तृतीयक स्तरों पर पढ़ाने के लिए। यह विशेष शिक्षा और शारीरिक शिक्षा तक भी पहुंचता है। इस प्रकार, जहाँ शिक्षक हैं, वहाँ शिक्षक की शिक्षा होगी। ज्ञान आधार पर्याप्त रूप से विशिष्ट है और चरणों में विविधतापूर्ण है, ताकि प्रत्येक चरण में एक शिक्षक से जो कार्य करने की उम्मीद की जाती है, उसके लिए प्रवेशी

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

शिक्षकों को तैयार करने की प्रभावी प्रक्रिया विकसित हो सके।

ii) शिक्षक की शिक्षा का त्रिकोणीय आधार

शिक्षक की शिक्षा मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और दर्शन विषयों से सैद्धांतिक आधार पर आधारित है। ये विषय शिक्षक की शिक्षा को एक मजबूत आधार प्रदान करते हैं। दार्शनिक आधार भविष्य के शिक्षक को दर्शन के विभिन्न विद्यालयों की अंतर्दृष्टि और उनके निहितार्थ, प्राचीन और आधुनिक दार्शनिक विचारों और शिक्षा पर दार्शनिक विचारकों के शैक्षिक विचारों और पाठ्यक्रम निर्माण और अनुशासन जैसे विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्रदान करता है। समाजशास्त्रीय आधार भविष्य के शिक्षकों को शिक्षा का चेहरा बदलने में समाज की गतिशीलता और भूमिका को समझने में मदद करता है। इसमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृश्यों को प्रभावित करने वाले आदर्शों को समाहित किया गया है। मनोवैज्ञानिक आधार शिक्षकों को स्वयं और दूसरों को समझने में मदद करता है। यह व्यक्तिगत अंतर, सीखने की विभिन्न परिस्थितियों और सीखने वालों की सीखने की शैली को समझने के लिए आधार प्रदान करता है।

iii) शिक्षक की शिक्षा के पहलू

शिक्षक की शिक्षा के चार पहलू शिक्षक शिक्षक, छात्र शिक्षक, सामग्री और शिक्षण रणनीति हैं। शिक्षक की शिक्षा मुख्य रूप से शिक्षक शिक्षकों की तैयारी से संबंधित है क्योंकि शिक्षक की शिक्षा की गुणवत्ता इस पर निर्भर करती है। एक शिक्षक शिक्षक अपनी व्यावसायिक दक्षता के माध्यम से शिक्षक की शिक्षा कार्यक्रम को मजबूत करता है। शिक्षक की शिक्षा छात्र शिक्षक को उनके शिक्षण पेशे में प्रभावी रूप से कार्य करने के लिए प्रासंगिक ज्ञान, दृष्टिकोण और कौशल प्रदान करके पहुंचती है। यह छात्र शिक्षकों को शिक्षण पेशे के सैद्धांतिक और वैचारिक ढांचे से लैस करता है। यह छात्र शिक्षकों को उन शिक्षकों को शिक्षण और नरम कौशल प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाता है जो गतिशील और बदलते परिवेश में चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक हैं। शिक्षक की शिक्षा अपनी विषय वस्तु और शिक्षण रणनीति पर ध्यान देती है ताकि कक्षा में शिक्षण को प्रभावित करने वाले सभी

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

कारकों को शामिल किया जा सके। यह छात्र शिक्षकों को अपने छात्रों की जरूरत और विशेषताओं के अनुसार सामग्री और शिक्षण रणनीतियों की योजना बनाने और विकसित करने के लिए कौशल प्रदान करता है।

शिक्षक की शिक्षा के घटक

पूर्व–सेवा और इन–सेवा शिक्षक की शिक्षा के दो पूरक घटक हैं।

i) पूर्व–सेवा शिक्षा वह शिक्षा है जो शिक्षण पेशे में प्रवेश करने से पहले या शिक्षण संस्थानों में रोजगार लेने से पहले होती है। इसे इन–सर्विस एजुकेशन का पहला कदम भी कहा जा सकता है। पूर्व–सेवा शिक्षक की शिक्षा ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है जो शिक्षा प्रणाली में सेवा करने के लिए आवश्यक है।

ii) शिक्षण सेवा में प्रवेश करने के बाद सेवा शिक्षा शुरू होती है। जिस क्षण एक शिक्षक ने शिक्षा के एक कॉलेज में अपना प्रशिक्षण पूरा किया है, इसका मतलब यह नहीं है कि वह आने वाले सभी समय के लिए प्रशिक्षित है। उसे व्यावसायिक विकास के लिए अपने पाठ्यक्रम ज्ञान और शैक्षणिक कौशल को लगातार अपडेट करने की आवश्यकता है। इसके लिए विभिन्न एजेंसियों द्वारा समय–समय पर इन–सर्विस शिक्षा के कई औपचारिक और अनौपचारिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। लॉरेंस के अनुसार "इन–सर्विस में सभी कार्यक्रम शामिल होते हैं– शैक्षिक, सामाजिक और अन्य जिसमें शिक्षक एक आभासी भाग लेता है, सभी अतिरिक्त शिक्षा जो वह विभिन्न संस्थानों में रिफ्रेशर और अन्य पेशेवर पाठ्यक्रमों के माध्यम से प्राप्त करता है और यात्रा करता है और यात्रा करता है जो वह करता है। ले जाता है।

पूर्व–सेवा शिक्षक की शिक्षा

डैश (2000) के अनुसार ष्पूर्व–सेवा शिक्षक की शिक्षा शिक्षण पेशे के लिए फ्रेशर की तैयारी को संदर्भित करती है। फ्रेशर्स जिन्होंने सामान्य शिक्षा की कुछ राशि हासिल कर ली है और जो शिक्षण पेशे से जुड़ना चाहते हैं, उन्हें प्रभावी ढंग से और कुशलता से पढ़ाने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और दृ ष्टिकोण से लैस करने के लिए पूर्व–सेवा शिक्षक की शिक्षा प्रदान करने की

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

आवश्यकता है। ९ संक्षेप में, पूर्व–सेवा शिक्षक की शिक्षा का अर्थ है अध्यापन के पेशे में प्रवेश करने से पहले शिक्षकों की शिक्षा। यह विभिन्न प्रकार के शिक्षकों की तैयारी के लिए किया जाता है अर्थात् प्राथमिक, प्राथमिक या माध्यमिक। पूर्व–सेवा शिक्षक की शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षा प्राप्त करने की अवधि के दौरान, शिक्षण अभ्यास और सिद्धांत पत्र साथ–साथ चलते हैं। इसके अलावा, इसमें कार्य शिक्षा, समुदाय के साथ काम करना, क्षेत्र कार्य आदि सहित व्यावहारिक कार्यों के आवश्यक घटक भी हैं। पूर्व–सेवा शिक्षक की शिक्षा कार्यक्रमों का उद्देश्य शिक्षक शिक्षण में सहायता करना और उन्हें बढ़ाना है, उन्हें आत्मविश्वास की एक बड़ी डिग्री प्रदान करना और उन्हें एक प्रभावी शिक्षक बनने में सक्षम बनाना।

निष्कर्ष

शिक्षण पद्धति शिक्षा की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षण विधियाँ, छात्रों द्वारा पाठ्य सामग्री को हस्तांतरित करने के लिए शिक्षक द्वारा अपनाई जाने वाली विधियाँ हैं। यह केवल शिक्षण विधियों का एक सतही विवरण है जिसे हम पारंपरिक रूप से स्वीकार करते हैं। पाठक व्याख्यान पद्धति, व्याख्यान प्रदर्शन विधि, अनुमानी पद्धति, डाल्टन योजना और जैसी कई शिक्षण विधियों से अवगत हो सकता है। प्रत्येक और हर विधि को अपनाने का उद्देश्य शिक्षकों और शैक्षिक शोधकर्ताओं के लिए बहुत स्पष्ट है। यह स्कूल पाठ्यक्रम के लेन–देन के माध्यम से छात्रों के मामले में व्यवहार के कुछ वांछनीय परिवर्तन के अलावा कुछ भी नहीं है। यह लेन–देन शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच कक्षा में शिक्षक द्वारा निष्पादित योजनाबद्ध गतिविधियों की एक श्रृंखला के माध्यम से किया जाता है। वे नियोजित गतिविधियाँ पाठ्यक्रम को सम्प्रेषित करने के लिए अध्यापक के रूप में अध्यापक की सेवा करती हैं। शिक्षण की विधि लक्ष्य समूह पर केवल एक प्रकार का प्रत्यक्ष प्रभाव पैदा करती है। एक सीधा प्रभाव पाठयक्रमों के लेन–देन का प्रभाव है। यह अध्यापकों द्वारा अध्यापन को शिक्षण उपलब्धि के रूप में सिखाने का परिणाम है। इस सीखने की उपलब्धि के लिए मनोवैज्ञानिक व्यवहार के परिवर्तन के रूप में अधिक व्यापक स्पष्टीकरण देते हैं। शिक्षण विधियों में, मुख्य

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

पहलू सामग्री को लेन–देन करने का तरीका हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

आजाद, एम। और अधिकारी, ए। (2008)। एचआईवी और एड्स के मुद्दों को संबोधित करें और लाइफ स्किल एजुकेशन के माध्यम से स्कूल के कमजोर किशोरों को सशक्त करें– राजीव गांधी फाउंडेशन, नई दिल्ली के सहयोग से मोडिकेयर फाउंडेशन का एक अनूठा अध्ययन।

बंबाका, एम। और पैट्रिकसन, एम। (2008)। पारस्परिक संचार कौशल जो संगठनात्मक प्रतिबद्धता को बढ़ाते हैं। संचार प्रबंधन जर्नल 12, 51–72।

बेस्ट, जे। डब्ल्यू। और कहन, जे। वी। (1992)। शिक्षा में अनुसंधान (छठा संस्करण)। नई दिल्लीरू प्रेंटिस–हॉल ऑफ इंडिया।

उत्तम, जे.डब्ल्यू। और कहन, जे.वी. (2006)। शिक्षा में अनुसंधान (10 वां संस्करण) नई दिल्लीरू अप्रेंटिस–हॉल ऑफ इंडिया।

भारत एस। और कुमार, के। (2010)। स्कूलों में जीवन कौशल शिक्षा के साथ किशोरों को सशक्त बनाना– स्कूल मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमरू क्या यह काम करता है? भारतीय जे मनोरोग में, 2010 अक्टूबर–दिसंबरय 52 (4)रू 344–349।

भरत, एस।, कुमार, के। वी। के।, और वृंदा, एम। एन। (2002)। जीवन कौशल दृष्टिकोण का उपयोग करके स्वास्थ्य संवर्धन पर शिक्षकों के लिए गतिविधि मैनुअल। बैंगलोररू छप्डभ।छै।

भारथ, एस। (2002)। लाइफ स्किल एप्रोच, निमहंस–बंगलौररू पवार प्रिंटर्स का उपयोग कर शिक्षकों को स्वास्थ्य संवर्धन पर शिक्षकों के लिए सक्रियता मानसिक।

भावे, एस.वाई। (2009)। जीवन कौशल किशोर और युवा लोगों में जोखिम कारकों के स्तर को कम करने के लिए शिक्षा। इंडियन जर्नल ऑफ लाइफ स्किल्स एजुकेशन, वीओ में। 1, जुलाई 2009, 1–12।

बोटविन, जी.जे. और अन्य। (2001)। ष्अल्पसंख्यक किशोरों के बीच नशीली दवाओं के दुरुपयोग की रोकथामरू पोस्टस्टेस्ट और स्कूल–आधारित रोकथाम हस्तक्षेप का एक

वर्ष का अनुवर्ती।ष रोकथाम विज्ञान, 2 (1), 1–13।

बोटविन, जी.जे.टी.एल। (1980)। जीवन कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से सिगरेट पीने की शुरुआत को रोकना। निवारक चिकित्सा के जर्नल, 9, 135–143।

बोटविन, जी.जे.टी.एल। (1984)। व्यक्तिगत और सामाजिक क्षमता के विकास के माध्यम से शराब के दुरुपयोग की रोकथामरू एक पायलट अध्ययन। शराब पर अध्ययन के पत्रिकाओं 550–552।

बुच एम.बी. (एड।), (1997)। शैक्षिक अनुसंधान का पांचवां सर्वेक्षण। नई दिल्लीरू राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 14।